

9-प्रज्ञावतार की विस्तार प्रक्रिया

अध्याय 1: युगसन्धि—महान् परिवर्तन की बेला

सरल स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: आज समाज में फैली हुई अतिवादी अवांछनीयता का मूल कारण क्या है?

उत्तर: समाज में फैली हुई अतिवादी अवांछनीयता का मूल कारण अधिकांश लोगों द्वारा अचिंत्य-चिन्तन (न सोचने योग्य विचार) और अकरणीय क्रियाकृत्य (न करने योग्य कार्य) अपना लिया जाना है।

प्रश्न 2: 'युगसन्धि महापुरश्चरण' योजना का मुख्य संकल्प और लक्ष्य क्या है?

उत्तर: 'युगसन्धि महापुरश्चरण' योजना का मुख्य संकल्प और लक्ष्य युगपरिवर्तन के लिए उपयुक्त वातावरण और परिवर्तन प्रस्तुत करना है।

प्रश्न 3: लेखक ने बीजों के अंकुरण और वृक्ष बनने का उदाहरण क्यों दिया है?

उत्तर: लेखक ने यह समझाने के लिए बीजों का उदाहरण दिया है कि जैसे वर्षा आने पर बीज अंकुरित होकर विशाल वृक्ष बन जाते हैं, वैसे ही एक छोटा सा प्रयास भी सही समय आने पर एक बड़े आंदोलन का रूप ले सकता है, जिससे एक नए युग का निर्माण हो सकता है।

प्रश्न 4: मत्स्यावतार की कथा का इस पुस्तक में क्या महत्व है?

उत्तर: मत्स्यावतार की कथा यह दर्शाती है कि कैसे ब्रह्मा जी के कमण्डल का एक छोटा सा जीव पूरे भूमण्डल में फैल गया। इसी तरह, यह उम्मीद की जाती है कि शान्तिकुञ्ज से शुरू हुआ यह छोटा आंदोलन भी पूरे विश्व में फैलकर सकारात्मक बदलाव लाएगा।

प्रश्न 5: संघशक्ति या बहुमत का युग से लेखक का क्या तात्पर्य है?

उत्तर: संघशक्ति या बहुमत के युग से लेखक का तात्पर्य है कि एकता में बहुत बड़ी शक्ति होती है। जैसे पक्षी मिलकर जाल उड़ा ले जाते हैं, ईंटें मिलकर भवन बनाती हैं और तिनके मिलकर रस्सी बनाते हैं, वैसे ही यदि अधिकांश लोग मिलकर अच्छी दिशा में प्रयास करें तो समाज की बुरी परिस्थितियों को बदला जा सकता है।

प्रश्न 6: देवता और दैत्य के बीच मूल अंतर क्या है?

उत्तर: देवता और दैत्य दोनों ही मनुष्यों की तरह दिखते हैं, लेकिन मूल अंतर यह है कि दैत्य दूसरों से केवल लूटते-खसोटते हैं और अपने संसाधनों का बहुत कम हिस्सा अच्छे कामों में लगाते हैं, जबकि देवता समाज को अधिक से अधिक देने का प्रयास करते हैं।

प्रश्न 7: युगपरिवर्तन किस रूप में अवतरित होने वाला है?

उत्तर: युगपरिवर्तन इस रूप में अवतरित होगा कि दैत्य-वृत्ति वाले लोग अपनी हठधर्मिता छोड़कर देवत्व की सत्प्रवृत्तियों को अपनाएंगे। लोगों के दृष्टिकोण में सुधार होगा, जिससे परिस्थितियाँ, वातावरण और समाज

का प्रचलन बदलेगा।

प्रश्न 8: 'युगसन्धि महापुरश्चरण' का संकल्प कहाँ से उभरा है?

उत्तर: 'युगसन्धि महापुरश्चरण' का संकल्प शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार से उभरा है, ठीक वैसे ही जैसे नर्मदा नदी की धारा अमरकंटक से निकलती है।

कठिन स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: 'युगसन्धि महापुरश्चरण' की योजना में समय के साथ क्या और क्यों बदलाव किए गए?

उत्तर: प्रारंभ में, इस योजना का लक्ष्य सन् 2000 तक एक लाख दीपयज्ञों के माध्यम से एक करोड़ लोगों को जोड़ना था। लेकिन लोगों के बढ़ते उत्साह और श्रद्धा को देखते हुए इस लक्ष्य को दोगुना कर दिया गया, ताकि कम समय में अधिक परिणाम मिल सकें। अब लक्ष्य सन् 2000 तक दो करोड़ भागीदार बनाने और दो लाख दीपयज्ञ आयोजित करने का है, जिसे पाँच-पाँच साल के दो चरणों में पूरा किया जाएगा।

प्रश्न 2: पूर्णाहुति के स्थान को लेकर मूल योजना क्या थी और उसे क्यों बदला गया?

उत्तर: मूल योजना यह थी कि पूर्णाहुति का आयोजन हरिद्वार या प्रयाग जैसे किसी एक स्थान पर किया जाए। लेकिन इसे इसलिए बदला गया ताकि अधिक क्षेत्रों के लोग अपने पास के केंद्रों पर आसानी से इकट्ठा हो सकें। इससे लोगों का यात्रा खर्च बचेगा और स्थानीय स्तर पर भोजन-आवास की व्यवस्था भी हो सकेगी। इस बदलाव का एक और बड़ा उद्देश्य यह था कि इस महाप्रयास की जानकारी व्यापक क्षेत्र तक आसानी से पहुँच सके।

प्रश्न 3: इस महाअभियान का मौलिक श्रेय किसे दिया गया है और शान्तिकुञ्ज के संचालकों की क्या भूमिका है?

उत्तर: इस अभियान का मौलिक श्रेय महाकाल (दैवी चेतना) को दिया गया है, क्योंकि यह संकल्प उन्हीं का है। शान्तिकुञ्ज के संचालकों ने केवल इस योजना की जानकारी लोगों तक पहुँचाने और आवश्यक व्यवस्था जुटाने का काम अपने ऊपर लिया है। उन्हीं की प्रेरणा से यह कार्य हो रहा है और वही इसे पूरा भी करेंगे।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: लेखक के अनुसार, शान्तिकुञ्ज के संचालक का स्थूल शरीर छोड़ने के बाद भी 'युगसन्धि महापुरश्चरण' में कोई बाधा क्यों नहीं आएगी?

उत्तर: लेखक के अनुसार, यह संकल्प स्वयं महाकाल का है, इसलिए वही इसे पूरा कराएँगे। इसके अतिरिक्त, शान्तिकुञ्ज के संचालक ने अपने स्थूल शरीर को छोड़ने और सूक्ष्म शरीर में प्रवेश करने की योजना बनाई है, जिससे वे और अधिक प्रचण्ड शक्ति का परिचय दे सकेंगे। वे अगले दस वर्षों तक सूक्ष्म रूप से आवश्यक

व्यवस्था बनाने और तारतम्य बिठाने के लिए भी वचनबद्ध हैं, इसलिए इस महापुरश्चरण में कोई बाधा नहीं आएगी।

प्रश्न 2: "यदि यह बहुमत उलट जाए तो फिर परिस्थितियों के बदल जाने में देर न लगे।" इस कथन का वर्तमान सामाजिक संदर्भ में विश्लेषण करें।

उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि समाज की वर्तमान नकारात्मकता का कारण लोगों की गलत सोच और गलत कर्मों का बहुमत में होना है। यदि यही बहुमत सकारात्मक सोच और सत्कर्मों को अपना ले, तो समाज में सतयुग जैसी परिस्थितियाँ वापस आ सकती हैं। आज के संदर्भ में, जहाँ भ्रष्टाचार, स्वार्थ और नैतिक पतन जैसी समस्याएँ हैं, यह कथन एक समाधान प्रस्तुत करता है। यदि अधिकांश लोग ईमानदारी, परोपकार और सहयोग जैसे मूल्यों को अपना लें, तो सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था में तुरंत सकारात्मक बदलाव दिखना शुरू हो जाएगा।

अध्याय 2: प्रयोजन के अनुरूप दायित्व भी भारी

सरल स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: अखण्ड ज्योति परिवार के सदस्य किन्हें माना जाता है?

उत्तर: जो लोग 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका के माध्यम से जुड़े हैं, उन्हें परिवार का सदस्य या परिजन माना जाता है।

प्रश्न 2: लेखक के अनुसार, मनुष्य में ऐसी कौन सी शक्ति है जो उसे अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ बनाती है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, मनुष्य के पास उच्चस्तरीय मनोबल की शक्ति है, जो उसे अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ बनाती है। इसी शक्ति के बल पर गाँधी जी जैसे सामान्य दिखने वाले व्यक्ति भी संसार को हिला देने वाले काम कर सके।

प्रश्न 3: शरीर की इन्द्रियों की सामान्य इच्छाएँ क्या होती हैं?

उत्तर: शरीर की इन्द्रियों की सामान्य इच्छाएँ हैं: कान को प्रशंसा सुनना, आँखों को सुंदर दृश्य देखना, जीभ को नए स्वाद चखना और मन को संग्रह की इच्छा और बड़प्पन की प्रशंसा पाना।

प्रश्न 4: दैवी अनुग्रह प्राप्त करने के लिए किस प्रकार की पात्रता आवश्यक है?

उत्तर: दैवी अनुग्रह प्राप्त करने के लिए केवल कर्मकाण्ड या पूजा-पाठ काफी नहीं है, बल्कि व्यक्ति में आदर्शवादी पुरुषार्थ करने की पात्रता होनी चाहिए। इसका अर्थ है कि उसके कार्य केवल शारीरिक सुख तक सीमित न होकर पुण्य-परमार्थ जैसे उद्देश्यों के लिए हों।

प्रश्न 5: विश्व के नवनिर्माण जैसे बड़े कार्य के लिए किस प्रकार की शक्ति की आवश्यकता होती है?

उत्तर: विश्व के नवनिर्माण के लिए किसी एक मनुष्य की शक्ति पर्याप्त नहीं है, इसके लिए ईश्वरीय आत्मबल और सुसंस्कारों द्वारा संचित मनोबल की बहुत बड़ी मात्रा में आवश्यकता होती है।

प्रश्न 6: महाभारत में कृष्ण का प्रयोजन पूरा करने में मुख्य भूमिका किसने निभाई?

उत्तर: महाभारत में कृष्ण का प्रयोजन पूरा करने में पाँच पाण्डवों ने मुख्य भूमिका निभाई थी।

कठिन स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: लेखक ने 'मनोबल' और 'आत्मबल' में क्या अंतर बताया है और असाधारण कार्य करने के लिए कौन सा बल आवश्यक है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, 'मनोबल' कुछ हद तक शरीर में भी होता है, जिससे व्यक्ति थोड़ी हिम्मत और साहस दिखाता है। लेकिन 'आत्मबल' एक असाधारण शक्ति है जो प्रवाह को उलट सकती है और वातावरण को बदल सकती है। यह आत्मबल दैवी चेतना के विशेष अनुग्रह से ही प्राप्त होता है और इसी के सहारे असाधारण कार्य किए जा सकते हैं। केवल शारीरिक पुरुषार्थ से तो सीमित कार्य ही हो पाते हैं।

प्रश्न 2: किसी बर्तन में पानी भरने के उदाहरण से लेखक क्या समझाना चाहते हैं?

उत्तर: इस उदाहरण से लेखक समझाना चाहते हैं कि जैसे एक बर्तन में उसकी गहराई और चौड़ाई के अनुसार ही पानी भरा जा सकता है, वैसे ही व्यक्ति को दैवी अनुग्रह भी उसकी पात्रता के अनुसार ही मिलता है। शरीर की क्षमता तो सीमित होती है, लेकिन तेजस्वी प्रतिभा (आत्मबल) व्यक्ति के पुण्य-परमार्थ जैसे कार्यों से उत्पन्न होती है, जो उसके अंतःकरण की गहराई को बढ़ाती है। इसी गहराई को मापकर दैवी अनुग्रह बरसता है।

प्रश्न 3: लेखक क्यों कहते हैं कि महत्वपूर्ण प्रसंगों पर हर किसी से बड़ी आशा नहीं की जा सकती?

उत्तर: लेखक कहते हैं कि महत्वपूर्ण प्रसंगों पर हर किसी से बड़ी आशा नहीं की जा सकती क्योंकि नवसृजन जैसे महान कार्यों का दायित्व बहुत भारी होता है और इसमें भाग लेने वालों को असाधारण श्रेय भी मिलता है। जैसे घर के विशेष कार्यों में केवल स्वजन-संबंधी ही साथ देते हैं, बाहरी लोग तो केवल तमाशा देखते हैं, उसी प्रकार इस महान कार्य में भी केवल समर्पित और पात्र व्यक्ति ही आगे आ सकते हैं। इसीलिए पाँच लाख परिजनों में से एक लाख के भी कदम से कदम मिलाकर चलने को बहुत माना गया है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: "आवश्यकता एक ही बात की है और वह है—आदर्शों का परिपालन निष्ठापूर्वक किया जाए।" इस कथन के माध्यम से लेखक ईश्वरीय आत्मबल प्राप्त करने का क्या मार्ग बताते हैं?

उत्तर: इस कथन के माध्यम से लेखक यह मार्ग बताते हैं कि ईश्वरीय आत्मबल प्राप्त करना किसी के लिए भी कठिन नहीं है, यदि वह कुछ मूलभूत सिद्धांतों का पालन करे। इसके लिए व्यक्ति को आस्तिकता, आध्यात्मिकता और धार्मिकता में गहरी आस्था रखनी होगी। उसे अपने स्वयं के मूल्य और महत्व को समझना

होगा और जन्म से मिली क्षमताओं का सही उपयोग करना होगा। जब कोई व्यक्ति निष्ठापूर्वक आदर्शों का पालन करता है, तो वह स्वतः ही दैवी सहायता का पात्र बन जाता है और विश्व-निर्माण जैसे महान कार्यों के लिए आवश्यक आत्मबल प्राप्त कर लेता है।

प्रश्न 2: भाग्य और पुरुषार्थ के संबंध में लेखक के विचारों का विश्लेषण करें। क्या मनुष्य भाग्यचक्र की कठपुतली मात्र है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, मनुष्य केवल भाग्यचक्र की कठपुतली नहीं है। उसे अपने भाग्य का विधाता कहा गया है क्योंकि उसमें भवितव्यता (होनी) को टालने और प्रतिकूलता को अनुकूलता में बदलने की क्षमता के बीज मौजूद हैं। यद्यपि हस्तरेखाओं और अन्य माध्यमों से भविष्य की संभावनाओं का अनुमान लगाया जा सकता है, लेकिन कोई भी घटना अकाट्य या अनिवार्य नहीं है। मनुष्य अपने पुरुषार्थ और सही उपायों से अशुभ संभावनाओं को रोक सकता है और सुखद संभावनाओं को और बेहतर बना सकता है। यदि बदलाव संभव न होता, तो मनुष्य केवल भाग्य पर निर्भर होकर रह जाता।

अध्याय 3: कुछ अतिरिक्त पूछ-ताछ

सरल स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: अखण्ड ज्योति पत्रिका के परिजनों की बड़ी संख्या में इकट्ठा होने का क्या रहस्यमय कारण बताया गया है?

उत्तर: इसके पीछे रहस्यमय कारण यह है कि किसी आकर्षण-शक्ति (सशक्त चुम्बकत्व) ने इन विशेष क्षमता वाले लोगों को खोजा और एकत्रित किया है। इसका एक और कारण पूर्व जन्मों की संचित सुसंस्कारिता भी है।

प्रश्न 2: लेखक के अनुसार, किस प्रकार के साहित्य की बिक्री आजकल बहुत कम होती है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, उच्चस्तरीय विवेकशीलता का प्रतिपादन करने वाला साहित्य आजकल बहुत कम बिकता या खरीदा जाता है, क्योंकि उथली अभिरुचि के लोगों को इसमें उत्साह ही नहीं आता।

प्रश्न 3: हर काम हर आदमी क्यों नहीं कर सकता? रामायण और महाभारत से क्या उदाहरण दिए गए हैं?

उत्तर: हर काम हर आदमी इसलिए नहीं कर सकता क्योंकि हर किसी में समान क्षमता नहीं होती। विशेष कार्यों के लिए विशेष प्रतिभा, संचित सुसंस्कारिता और तप-सम्पदा की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, रामायण में जो भूमिका हनुमान ने निभाई और महाभारत में जो भूमिका अर्जुन ने निभाई, उसे उस समय मौजूद कोई और व्यक्ति आसानी से पूरा नहीं कर सकता था।

प्रश्न 4: अखण्ड ज्योति परिवार को किस प्रकार के योद्धाओं का परिवार कहा गया है?

उत्तर: इस परिवार को इक्कीसवीं सदी के उत्कृष्ट आदर्शवादी मोर्चे पर जुझारू स्तर पर लड़ने वाले प्रचण्ड योद्धाओं का परिवार कहा गया है।

प्रश्न 5: परिजनों से उनकी जन्म-तिथि, फोटो और हस्तरेखा जैसी जानकारी क्यों माँगी जा रही है?

उत्तर: यह जानकारी भविष्य-फल बताने के लिए नहीं, बल्कि इस आधार पर परिजनों की विशिष्टता का आकलन करने के लिए माँगी जा रही है। इसका उद्देश्य यह है कि उन्हें समय आने पर सही संकेत और मार्गदर्शन दिया जा सके तथा विशेष प्रयोजनों में उनका योगदान लिया जा सके।

कठिन स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: लेखक ने अखण्ड ज्योति के पाठकों की तुलना मधुमक्खियों से क्यों की है?

उत्तर: लेखक ने यह तुलना यह समझाने के लिए की है कि जैसे मधुमक्खियों के छत्ते में कुछ विशेष क्षमता वाली मक्खियाँ ही रानी मक्खी के अनुशासन में रहने के लिए खिंची चली आती हैं, उसी प्रकार अखण्ड ज्योति परिवार में भी विशेष क्षमता सम्पन्न लोग ही एक सूत्र में बंधे हैं। यह कोई साधारण भीड़ नहीं, बल्कि विशिष्ट परिजनों का एक ऐसा समूह है जो कई जन्मों से एक-दूसरे से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है।

प्रश्न 2: "यह रास्ता चलती भीड़ नहीं है, वरन् यह किसी विशेष उद्देश्य के लिए विशिष्ट परिजनों का समुच्चय है।" इस कथन को कैसे सिद्ध किया गया है?

उत्तर: इस कथन को इस तथ्य से सिद्ध किया गया है कि इन परिजनों को समय-समय पर ऐसे आदर्शवादी काम सौंपे जाते रहे हैं, जिनमें औसत आदमी की रुचि नहीं होती। इसके बावजूद, ये परिजन उन कार्यों को पूरी तत्परता और तन्मयता से करते हैं, जो यह साबित करता है कि वे एक विशेष उद्देश्य के लिए एकत्रित हुए हैं और साधारण लोग नहीं हैं।

प्रश्न 3: इक्कीसवीं सदी की चुनौतियों का सामना करने के लिए किस प्रकार की प्रतिभाओं की आवश्यकता होगी और उनका चयन कैसे होगा?

उत्तर: इक्कीसवीं सदी की चुनौतियों का सामना करने के लिए साधारण योग्यता वाले लोग पर्याप्त नहीं होंगे, बल्कि असाधारण प्रतिभा की आवश्यकता होगी। इन प्रतिभाओं का चयन प्रतिस्पर्धाओं की कसौटी पर होगा। जो लोग बार-बार अपनी वरिष्ठता और क्षमता का परिचय देंगे, उन्हें ही कठिन मोर्चे संभालने के लिए नियुक्त किया जाएगा, जबकि हल्के दर्जे के मोर्चे हल्के लोगों को सौंपे जाएँगे।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: अखण्ड ज्योति पत्रिका की सफलता को लेखक 'चमत्कार' क्यों मानते हैं, जबकि इसी विषय की अन्य पत्रिकाएँ असफल हो जाती हैं?

उत्तर: लेखक इसे 'चमत्कार' इसलिए मानते हैं क्योंकि अखण्ड ज्योति एक 'गरिष्ठ' यानी गंभीर विषय का

प्रतिपादन करती है, जिसमें आम लोगों की रुचि कम होती है। आमतौर पर ऐसे गंभीर साहित्य को लोग पढ़ना पसंद नहीं करते और इसी कारण इस विषय की अन्य पत्रिकाएँ या तो बंद हो जाती हैं या उनके सदस्य बहुत कम होते हैं। इसके विपरीत, अखण्ड ज्योति के पाठकों की संख्या बहुत विशाल है। लेखक के अनुसार यह अनायास नहीं हुआ, बल्कि इसके पीछे एक **दिव्य आकर्षण-शक्ति** और पाठकों की **संचित सुसंस्कारिता** है, जिसने उन्हें इस मिशन से जोड़ा है।

प्रश्न 2: "प्रतिभाओं की परख प्रतिस्पर्धाओं की कसौटी पर होती रहती है।" इस कथन का विश्लेषण करते हुए बताएं कि मिशन अपने परिजनों की पात्रता कैसे जाँचता है और भविष्य के लिए उन्हें कैसे तैयार कर रहा है?

उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि किसी व्यक्ति की वास्तविक क्षमता का पता तभी चलता है जब उसे चुनौतीपूर्ण कार्यों या परीक्षाओं में परखा जाता है। मिशन अपने परिजनों की पात्रता इसी तरह जाँचता है। उन्हें समय-समय पर ऐसे आदर्शवादी कार्य सौंपे जाते हैं जिन्हें करने में सामान्य व्यक्ति रुचि नहीं लेता। इन कार्यों को सफलतापूर्वक पूरा करने से उनकी निष्ठा, क्षमता और समर्पण की परख होती है। इस निरंतर परीक्षण और प्रशिक्षण के माध्यम से, जो लगभग 52 वर्षों से पत्रिका के माध्यम से चल रहा है, उन्हें इक्कीसवीं सदी के बड़े और कठिन मोर्चों को संभालने के लिए तैयार किया जा रहा है। यह एक ऐसी ट्रेनिंग है जो उनकी नस-नस में आदर्शवादिता को भर देती है।

अध्याय 4: दैवी सहायता भी अपेक्षित

सरल स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: मनुष्य को अपने जीवन में उन्नति के लिए किन चीजों की आवश्यकता होती है?

उत्तर: मनुष्य को अपने जीवन में उन्नति के लिए अपने पुरुषार्थ, ज्ञान और सूझ-बूझ की आवश्यकता होती है।

प्रश्न 2: दैवी अनुग्रह या सहायता किस रूप में मिल सकती है?

उत्तर: दैवी सहायता किसी मित्र, सहायक या संबंधी की मदद के रूप में, व्यापार में अचानक बड़े लाभ या लॉटरी खुलने के रूप में, या उत्तराधिकार में मिली संपत्ति के रूप में मिल सकती है।

प्रश्न 3: लेखक ने किसान के व्यवसाय का उदाहरण क्यों दिया है?

उत्तर: लेखक ने यह समझाने के लिए किसान का उदाहरण दिया है कि जैसे किसान की मेहनत के बावजूद अतिवृष्टि, अनावृष्टि या ओले जैसी अप्रत्याशित घटनाएँ उसकी सारी उम्मीदों पर पानी फेर सकती हैं, वैसे ही जीवन में कभी-कभी भरपूर मेहनत के बाद भी परिस्थितियाँ विपरीत हो जाती हैं। इसे भाग्य या समय का फेर भी कहा जाता है।

प्रश्न 4: क्या संसार में कोई भी घटना अनायास या बिना कारण के होती है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, इस संसार में "अनायास" नाम की कोई चीज नहीं है। हर घटना के पीछे कुछ कारण होते हैं, भले ही हम उन्हें जानते न हों।

प्रश्न 5: पुण्य-परमार्थ की तुलना किस आधुनिक व्यवस्था से की गई है?

उत्तर: पुण्य-परमार्थ की तुलना बैंक, बीमा और शेयरों के कारोबार से की गई है। जैसे लोग अपना अतिरिक्त धन बैंक में जमा करते हैं, वैसे ही पुण्य आत्माएँ अपने पुण्य का भंडार जमा रखती हैं और जरूरत पड़ने पर दूसरों की सहायता करती हैं।

प्रश्न 6: इक्कीसवीं सदी में कौन से दो बड़े कार्य होने वाले हैं?

उत्तर: इक्कीसवीं सदी में दो बड़े कार्य होने वाले हैं: पहला, समाज में फैली अवांछनीयताओं (बुराइयों) को उलटना और संकटों को दूर करना; और दूसरा, नव-निर्माण के लिए सकारात्मक कार्य करना।

कठिन स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: "मनुष्य के अपने पुरुषार्थ" और "दैवी अनुग्रह" में क्या संबंध है और ये दोनों कैसे एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं?

उत्तर: मनुष्य का अपना पुरुषार्थ उसकी उन्नति का आधार है, लेकिन कभी-कभी परिस्थितियाँ उसके नियंत्रण से बाहर होती हैं। ऐसे समय में दैवी अनुग्रह एक अप्रत्याशित सहायता के रूप में काम करता है, जो रुके हुए काम को आगे बढ़ा देता है। दूसरी ओर, यदि समय विपरीत हो, तो भरपूर पुरुषार्थ और सूझ-बूझ भी काम नहीं देती। इसलिए, सफलता के लिए पुरुषार्थ और दैवी कृपा दोनों का संतुलन आवश्यक है।

प्रश्न 2: भाग्य और पूर्व जन्म के संस्कारों के बारे में लेखक का क्या मत है?

उत्तर: लेखक का मत है कि जिन्हें हम आकस्मिक लाभ या हानि कहते हैं, उनके पीछे अक्सर भाग्य का फेर कहा जाता है। लेकिन वास्तव में, यह हमारे पूर्व जन्मों के संग्रहित संस्कारों का परिणाम होता है, जो सही समय आने पर फलित होते हैं। हम इस विधान को पूरी तरह समझ नहीं पाते, इसलिए इसे भाग्य का नाम दे देते हैं।

प्रश्न 3: इक्कीसवीं सदी के नवनिर्माण में जुटने वाले परिजनों की भूमिका की तुलना किससे की गई है?

उत्तर: इक्कीसवीं सदी के नवनिर्माण में जुटने वाले परिजनों की भूमिका की तुलना मोर्चे पर लड़ने वाले सैनिकों और निर्माण कार्य करने वाले ठेकेदारों से की गई है। जैसे सैनिकों को हथियार और रसद संचालन सूत्र से मिलती है और ठेकेदार को निर्माण के लिए पूँजी व्यवस्थापक से मिलती है, उसी प्रकार परिजनों को भी इस महान कार्य के लिए आवश्यक शक्ति, सूझ-बूझ और साधन दैवी सत्ता से प्राप्त होंगे। उनका अपना श्रेय कर्म करने में है, पर मूल शक्ति स्रोत दैवी है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: अपवादों को "दैवी कृपा" क्यों कहा जाता है, जबकि लेखक के अनुसार सृष्टि में सब कुछ नियमों पर आधारित है? इस विरोधाभास को समझाएँ।

उत्तर: लेखक कहते हैं कि सृष्टि के नियम अकाट्य हैं और कुछ भी अनायास नहीं होता। फिर भी, जीवन में ऐसी घटनाएँ होती हैं जो सामान्य तर्क और पुरुषार्थ से परे होती हैं, जिन्हें "अपवाद" कहा जाता है। इन्हीं अपवादों को दैवी कृपा या अनुग्रह के नाम से जाना जाता है। यह एक विरोधाभास लगता है, लेकिन लेखक इसे समझाते हुए कहते हैं कि इन अपवादों के पीछे भी कुछ गहरे कारण और नियम काम करते हैं, जैसे पूर्व जन्मों के संस्कार, जिन्हें हम अपनी सीमित बुद्धि से जान नहीं पाते। इसलिए जो हमारी समझ से परे है, उसे हम दैवी कृपा या भाग्य कह देते हैं।

प्रश्न 2: लेखक ने "उदार अनुदान" की अवधारणा को कैसे समझाया है? यह बैंक की कार्यप्रणाली से किस प्रकार समानता रखती है?

उत्तर: "उदार अनुदान" की अवधारणा यह है कि संसार में ऐसी पुण्य आत्माएँ हैं जिनके पास पुण्य का विशाल भंडार है। जैसे लोग अपनी अतिरिक्त पूँजी को सुरक्षा के लिए बैंक में जमा करते हैं, वैसे ही ये आत्माएँ अपने पुण्य को एक तरह से जमा रखती हैं। जब किसी जरूरतमंद को सहायता की आवश्यकता होती है, तो ये पुण्य आत्माएँ उसकी मदद करती हैं। इसमें दोहरा लाभ है: जरूरतमंद का रुका हुआ काम चल पड़ता है और दान देने वाले को भी आवश्यकता पड़ने पर पुण्य वापस मिल जाता है। यह ठीक बैंक की तरह काम करता है, जहाँ जमा किया गया धन ब्याज समेत वापस मिलता है और दूसरों के काम भी आता है।

अध्याय 5: भगवान के विशेष अनुग्रह और अनुदान की उपलब्धि

सरल स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: मनुष्य शरीर में प्राण का क्या महत्व है?

उत्तर: मनुष्य का शरीर पंचतत्त्वों का बना जड़ घोंसला है, जिसमें चेतना 'प्राण' के रूप में रहती है। प्राण के बिना शरीर निर्जीव हो जाता है और सड़ने-गलने लगता है।

प्रश्न 2: 'प्राणायाम' के माध्यम से व्यक्ति क्या विशेष उपलब्धि प्राप्त कर सकता है?

उत्तर: 'प्राणायाम' की कला में प्रवीण लोग सामान्य से अधिक मात्रा में प्राण-शक्ति ग्रहण कर सकते हैं और उस संचित ऊर्जा का उपयोग अपना और दूसरों का भला करने के लिए कर सकते हैं, जिससे वे 'प्राणवान' कहलाते हैं।

प्रश्न 3: 'शक्तिपात' क्या है?

उत्तर: 'शक्तिपात' वह प्रक्रिया है जिसमें कोई समर्थ व्यक्ति अपनी दिव्य क्षमता या प्राण-शक्ति का एक भाग दूसरे व्यक्ति को देकर उसकी सहायता कर सकता है।

प्रश्न 4: भगवान जिन लोगों को विशेष कार्यों के लिए चुनते हैं, उनमें क्या खास बात होती है?

उत्तर: भगवान जिन लोगों को विशेष कार्यों के लिए चुनते हैं, उनमें दिव्य प्राण की मात्रा अधिक होती है। इसी के सहारे वे साधारण मनुष्यों से ऊपर उठकर महान आदर्शों के लिए असाधारण साहस दिखाने में समर्थ होते हैं।

प्रश्न 5: दैवी अनुग्रह का वास्तविक चिह्न क्या है?

उत्तर: दैवी अनुग्रह का वास्तविक चिह्न है—आदर्शवादिता की दिशा में साहसपूर्वक बड़े कदम उठाना और इस रास्ते में आने वाली कठिनाइयों को हँसते-हँसते सहन कर लेना।

प्रश्न 6: रावण की सभा में अंगद के पैर जमाने का उदाहरण क्या सिखाता है?

उत्तर: यह उदाहरण सिखाता है कि आत्मबल और दैवी अनुग्रह से भरा व्यक्ति असंभव लगने वाले कार्य भी कर सकता है, जबकि औसत या कायर व्यक्ति को छोटे-छोटे त्याग भी पहाड़ उठाने जैसे भारी लगते हैं।

कठिन स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: लेखक ने प्राण को "देवता" क्यों कहा है और शरीर को "मनुष्यकृत" क्यों बताया है?

उत्तर: लेखक ने शरीर को "मनुष्यकृत" कहा है क्योंकि यह नर-नारी के गुणसूत्रों से विकसित होता है और इसकी सीमाएँ होती हैं। वहीं, प्राण को "देवता" कहा गया है क्योंकि यह असीम है, पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त है और दिव्य क्षमताओं का स्रोत है। यह एक शरीर से दूसरे शरीर में हस्तांतरित भी हो सकता है, जो इसकी दैवी प्रकृति को दर्शाता है।

प्रश्न 2: साधारण मनुष्य और भगवान द्वारा चुने गए विशेष व्यक्ति के दृष्टिकोण में क्या मूल अंतर होता है?

उत्तर: साधारण मनुष्य सांसारिक बंधनों में जकड़ा रहता है और जब कुछ बड़ा करने का समय आता है तो छोटे-छोटे विघ्न भी उसे पहाड़ जैसे लगते हैं और वह भयभीत हो जाता है। इसके विपरीत, जिस पर भगवान का विशेष अनुग्रह होता है, वह अनुकरणीय और अभिनंदनीय कार्य करने के लिए हमेशा उत्साह से भरा रहता है और जहाँ भी अनीति देखता है, वहाँ लड़ने का साहस दिखाता है।

प्रश्न 3: लोग दैवी अनुग्रह को लेकर क्या गलत धारणा रखते हैं?

उत्तर: लोग अक्सर अपनी छोटी-मोटी मनोकामनाओं की पूर्ति को ही दैवी अनुग्रह मान लेते हैं, जो सामान्य पुरुषार्थ या संयोग से भी पूरी हो सकती हैं। वे अपनी हर सफलता को दैवी कृपा और हर असफलता को दैवी

प्रकोप मानकर अपने आत्मबल को कमजोर कर लेते हैं। वे यह नहीं समझते कि सच्चा दैवी अनुग्रह आदर्शों के लिए असीम साहस के रूप में मिलता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: "नर से नारायण बनने" की प्रक्रिया में प्राण-शक्ति की क्या भूमिका है? विस्तार से समझाएँ।

उत्तर: "नर से नारायण बनने" की प्रक्रिया का अर्थ है एक साधारण मनुष्य का देवत्व के गुणों को प्राप्त कर महामानव बनना। इस प्रक्रिया में प्राण-शक्ति की केंद्रीय भूमिका है। लेखक के अनुसार, साधारण मनुष्य अपने शरीर-बल तक सीमित रहता है, लेकिन जब उस पर भगवान की विशेष अनुकंपा होती है, तो परमपिता उसे अपने उच्चस्तरीय प्राण का एक अंश प्रदान करते हैं। यही अतिरिक्त प्राण-शक्ति व्यक्ति के आत्मबल और मनोबल को असाधारण रूप से बढ़ा देती है। इसी शक्ति के सहारे वह सांसारिक मोह और कायरता से ऊपर उठकर आदर्शों के लिए बड़े से बड़ा त्याग करने और असंभव लगने वाले कार्य करने में सक्षम हो जाता है, जिससे वह नर-वानर की श्रेणी से उठकर नारायण की पदवी तक पहुँच जाता है।

प्रश्न 2: इक्कीसवीं सदी में उभरने वाली प्रतिभाओं की प्रकृति क्या होगी और यह पिछली सदी के भ्रष्ट चिंतन से किस प्रकार भिन्न होगी?

उत्तर: इक्कीसवीं सदी में ऐसी प्रतिभाएँ उभरेंगी जिन पर भगवान की विशेष प्राण-चेतना की कृपा बरसेगी। ये वे लोग होंगे जो पैसा, स्वास्थ्य या बड़प्पन जैसे सांसारिक लक्ष्यों से ऊपर उठकर आदर्शों के लिए साहसपूर्वक खड़े होंगे। पिछली एक सदी में कुविचारों और कुकर्मों की बाढ़ आई, जहाँ लोग गिरने और गिराने में प्रतिस्पर्धा करते थे। इसके ठीक विपरीत, इक्कीसवीं सदी की प्रतिभाएँ उठने और उठाने में अपनी ऊर्जा लगाएंगी। जिनके क्रिया-कलाप देखकर पहले निराशा होती थी, उनमें से भी कई ऐसे उभरेंगे जो स्वयं को धन्य बनाएंगे और दूसरों को भी प्रेरित करेंगे। यह बदलाव व्यक्ति के चिंतन के स्तर पर होगा, जो भ्रष्ट-चिन्तन को सदाशयता में बदल देगा।

अध्याय 6: पात्रता की तात्कालिक आवश्यकता

सरल स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: लेखक के अनुसार मनुष्य अपनी दुर्गति का कारण स्वयं कैसे बनता है?

उत्तर: मनुष्य अपनी लालसा, वासना और अहंता (अहंकार) के चक्र में फँसकर सुख-सौभाग्य के स्थान पर अपने और दूसरों के लिए समस्याएँ पैदा करता है और इस प्रकार अपनी दुर्गति का कारण स्वयं बनता है।

प्रश्न 2: सफलता प्राप्त करने के लिए पात्रता के कौन-से तीन नियम बताए गए हैं?

उत्तर: सफलता के लिए पात्रता के तीन नियम हैं:

1. उत्साह और स्फूर्ति से भरी श्रमशीलता (मेहनत)।

2. तन्मयता और तत्परता से भरी अभिरुचि (लगन)।

3. उत्कृष्टता के लिए गहरी ललक (इच्छा)।

प्रश्न 3: इस समय भगवान को बेचैनी से सत्पात्रों की खोज क्यों करनी पड़ रही है?

उत्तर: भगवान को सत्पात्रों की खोज इसलिए करनी पड़ रही है क्योंकि वर्तमान की सड़ी-गली परिस्थितियों को अधिक समय तक रहने नहीं दिया जा सकता और बदलाव के इस महान कार्य को पूरा करने के लिए योग्य व्यक्तियों की तत्काल आवश्यकता है।

प्रश्न 4: जटायु और अष्टावक्र के उदाहरणों से क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर: इन उदाहरणों से यह शिक्षा मिलती है कि यदि व्यक्ति में आदर्शों के प्रति सच्ची उमंग और साहस हो तो शारीरिक रूप से कमजोर या विकलांग होते हुए भी वह ऐसे महान कार्य कर सकता है, जो शक्तिशाली युवा भी नहीं कर पाते।

प्रश्न 5: लेखक के अनुसार, मनुष्य की प्रगति में सबसे बड़ा अभिशाप क्या है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, मनुष्य की कृपणता (कंजूसी), कायरता और संकीर्णता (छोटी सोच) ही वह अभिशाप है जो उसे समर्थ होते हुए भी महान कार्य करने से रोकती है और वह कठिनाइयों के बहाने बनाता रहता है।

कठिन स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: लेखक क्यों कहते हैं कि "गिरना तो किसी के लिये भी सरल हो सकता है; पर उबरने और ऊँचा उठने के लिये मात्र अपने पुरुषार्थ से भी काम नहीं चलता"?

उत्तर: लेखक ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि मनुष्य अपनी ही बनाई हुई दुर्गति (लालसा, वासना, अहंकार) से इतना कमजोर हो जाता है कि उससे बाहर निकलने के लिए उसे किसी समर्थ सहायक की आवश्यकता पड़ती है। हालांकि, यह सहायता भी मुफ्त में नहीं मिलती, इसके लिए व्यक्ति को अपनी पात्रता सिद्ध करनी पड़ती है।

प्रश्न 2: विभूतिवान (विशेष प्रतिभा और साधनों से संपन्न) लोग अक्सर अपनी क्षमताओं का दुरुपयोग कैसे करते हैं? यदि वे इसका सदुपयोग करें तो क्या हो सकता है?

उत्तर: विभूतिवान लोग अक्सर अपनी विशेष क्षमताओं का उपयोग केवल लिप्सा, लालसा, तृष्णा, वासना और संकीर्ण स्वार्थपरता जैसे छोटे उद्देश्यों के लिए ही कर देते हैं। यदि वे इन्हीं साधनों का उपयोग लोक-कल्याण के लिए करते, तो समाज निर्माण की दिशा में महान कार्य हो सकते थे, उनकी कीर्ति अमर हो जाती और वे दूसरों के लिए प्रेरणास्रोत बन जाते।

प्रश्न 3: "गरज कारीगरों को उतनी नहीं पड़ी है, जितनी कि निर्माणकर्ताओं को।" इस कथन का युग परिवर्तन के संदर्भ में क्या अर्थ है?

उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि यह आपत्तिकाल है और युग परिवर्तन का कार्य स्वयं नियन्ता (भगवान) का है, इसलिए उन्हें इस कार्य को पूरा करने की जल्दी है। सामान्यतः भक्त भगवान से कृपा माँगते हैं, लेकिन इस समय भगवान को स्वयं सत्पात्रों (योग्य व्यक्तियों) की आवश्यकता है, जो इस महान निर्माण कार्य में भूमिका निभा सकें। इसलिए, भगवान स्वयं बेचैनी से योग्य लोगों को ढूँढ रहे हैं।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: पात्रता और ईश्वरीय अनुकंपा के बीच क्या संबंध है? क्या ईश्वर बिना किसी भेदभाव के सभी पर समान कृपा करते हैं?

उत्तर: यद्यपि ईश्वर के लिए सभी समान और प्रिय हैं, लेकिन वे उन लोगों के साथ अन्याय नहीं कर सकते जिन्होंने कठोर परिश्रम करके अपनी योग्यता और पात्रता सिद्ध की है। ईश्वरीय अनुकंपा केवल उन्हीं पर बरसती है जो उत्साह, तन्मयता और उत्कृष्टता की ललक जैसे गुणों से अपनी पात्रता साबित करते हैं। जैसे उच्च पदों पर नियुक्ति प्रतिस्पर्धा में जीतने वालों की ही होती है, वैसे ही दैवी अनुदान भी पात्र व्यक्तियों को ही मिलता है।

प्रश्न 2: गीता के श्लोक "क्षुद्रं हृदय दौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप" का उल्लेख करते हुए लेखक मनुष्य को महामानव बनने का क्या मार्ग सुझाते हैं?

उत्तर: इस श्लोक का अर्थ है, "हे परंतप! हृदय की इस क्षुद्र दुर्बलता को त्यागकर उठ खड़े हो"। इसका उल्लेख करते हुए लेखक यह मार्ग सुझाते हैं कि मनुष्य की सबसे बड़ी बाधा उसकी अपनी ही कृपणता, कायरता और संकीर्ण सोच है। यदि व्यक्ति इस मानसिक कमजोरी को त्याग दे और आदर्शों के प्रति उदारता दिखाए, तो वह एक मजबूत आधार बना सकता है जिसके बल पर वह साधारण व्यक्ति से उठकर महामानवों की श्रेणी में पहुँच सकता है और अपने साथ-साथ दूसरों का भी कल्याण कर सकता है।

अध्याय 7: यह समय चूकने का है नहीं

सरल स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: लेखक के अनुसार, कब ऐसा समय आता है जब भगवान को भक्तों से याचना करनी पड़ती है?

उत्तर: जब युग परिवर्तन जैसे महान कार्य करने होते हैं, तब ऐसा समय आता है जब भगवान स्वयं भक्तों के पास जाकर सहायता के लिए याचना करते हैं और बदले में उन्हें बहुत अधिक महत्व देते हैं।

प्रश्न 2: अर्जुन महाभारत के युद्ध के लिए पहले क्यों तैयार नहीं थे?

उत्तर: अर्जुन अपने कुटुम्बियों (परिवारजनों) पर हथियार न उठाने का सिद्धान्तवादी तर्क देकर और भीख माँगकर जीवन बिता लेने की बात कहकर युद्ध के लिए तैयार नहीं थे।

प्रश्न 3: भगवान कृष्ण ने अर्जुन को युद्ध के लिए कैसे प्रेरित किया?

उत्तर: भगवान ने अर्जुन के मन की कमजोरी को समझा और उन्हें कठोर शब्दों में फटकार लगाते हुए दबाव डाला। उन्होंने अर्जुन को श्रेय और यश दिलाने के लिए संग्राम के बीच में गीता का उपदेश देकर उन्हें अपने प्रयोजन में भागीदार बनने के लिए सहमत किया।

प्रश्न 4: लेखक ने युग-परिवर्तन की इस वेला को किसके समान बताया है?

उत्तर: लेखक ने इस वेला को ऐतिहासिक, असाधारण और एक ऐसा ब्रह्ममुहूर्त बताया है जो हजारों-लाखों वर्षों में एक बार आता है।

प्रश्न 5: जो लोग इस विशेष समय का सदुपयोग करते हैं, उन्हें क्या फल मिलता है?

उत्तर: जो लोग इस विशेष समय का सदुपयोग कर लेते हैं, वे स्वयं को सदा-सर्वदा के लिए अजर-अमर बना लेते हैं और उच्च कोटि का शौर्य पदक प्राप्त करते हैं।

कठिन स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: सुदामा और गोपियों के उदाहरणों से लेखक "पात्रता" के बारे में क्या सिद्ध करना चाहते हैं?

उत्तर: इन उदाहरणों से लेखक यह सिद्ध करना चाहते हैं कि भगवान को ठगा नहीं जा सकता और वे बिना पात्रता की जाँच किए किसी को महत्वपूर्ण अनुदान नहीं देते। सुदामा जब अपनी चावल की पोटली देने में संकोच कर रहे थे, तो कृष्ण ने उसे बलपूर्वक छीनकर उनकी उदारता को परखा और तभी उन्हें ऐश्वर्य प्रदान किया। इसी तरह, वे गोपियों से छाछ लिए बिना उन पर कृपा नहीं करते थे। इससे स्पष्ट है कि केवल भक्ति का दिखावा करने से कुछ नहीं मिलता, त्याग और समर्पण आवश्यक है।

प्रश्न 2: "समय की प्रतीक्षा तो की जा सकती है, पर समय किसी की भी प्रतीक्षा नहीं करता।" इस कथन का वर्तमान युग-परिवर्तन के संदर्भ में विश्लेषण करें।

उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि युग-परिवर्तन का यह विशेष अवसर बार-बार नहीं आएगा। जो व्यक्ति यह सोचकर इसे टालता रहेगा कि भविष्य में भी ऐसे मौके मिलेंगे, वह बहुत बड़ी भूल कर रहा है। जैसे हनुमान और अर्जुन को जो भूमिका निभाने का अवसर मिला, वह अब दोबारा नहीं मिल सकता। ठीक उसी प्रकार, इस महाक्रांति की वेला में योगदान देने का यह स्वर्णिम अवसर यदि चूक गए तो बाद में केवल पछतावा ही हाथ लगेगा।

प्रश्न 3: लेखक क्यों कहते हैं कि यह समय कायर, लोभी और डरपोक लोगों के लिए नहीं है?

उत्तर: लेखक कहते हैं कि यह महान परिवर्तन और महाक्रांति की वेला है, जो आदर्शवादी और कठोर सैनिकों के लिए एक परीक्षा की घड़ी के समान है। ऐसे समय में यदि सेना के सैनिक ही कायरता और आलस्य दिखाएँ, तो पूरी सेना की हार हो जाती है। इसलिए, इस महत्वपूर्ण मोड़ पर कायर, लोभी और डरपोक लोगों की कोई

भूमिका नहीं है, बल्कि यह समय साहसी और समर्पित योद्धाओं का है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: "भगवान् सर्व शक्तिमान् होने से महाभारत को अकेले भी जीत सकते थे, पर अर्जुन को श्रेय देना था।"

इस वाक्य में भगवान और भक्त के बीच के संबंध का कौन-सा गहरा रहस्य छिपा है?

उत्तर: इस वाक्य में यह गहरा रहस्य छिपा है कि भगवान अपने महान कार्यों को पूरा करने के लिए मनुष्यों को माध्यम बनाते हैं, ताकि वे उन्हें श्रेय और यश दिला सकें। यह सच्ची मित्रता और गुरु-शिष्य परंपरा का प्रतीक है। भगवान चाहते तो अकेले ही सब कुछ कर सकते थे, लेकिन वे अपने भक्तों को ऊँचा उठाना चाहते हैं, उनकी क्षमताओं को निखारना चाहते हैं और इतिहास में उन्हें अमर बनाना चाहते हैं। इसलिए वे मनुष्य को अपने दैवी प्रयोजन में भागीदार बनाते हैं।

प्रश्न 2: "इन दिनों मनुष्य का भाग्य और भविष्य नये सिरे से लिखा और गढ़ा जा रहा है।" इस कथन की व्याख्या करें। इस प्रक्रिया में एक सामान्य व्यक्ति की क्या भूमिका हो सकती है?

उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि यह एक असाधारण और निर्णायक समय है, जब पूरी मानवता की दिशा तय हो रही है। अवांछनीयता का अंत और अच्छाई की स्थापना हो रही है। इस प्रक्रिया में, एक सामान्य व्यक्ति भी छोटी-सी भूमिका निभाकर अपने भाग्य को बदल सकता है। जैसे समुद्र मंथन या सृष्टि की रचना एक ही बार हुई, वैसे ही यह नवयुग का सृजन भी एक ही बार हो रहा है। इस पुण्य वेला में किया गया छोटा-सा भी पुरुषार्थ व्यक्ति को इतिहास में अमर बना सकता है और उसका भविष्य हमेशा के लिए उज्ज्वल कर सकता है। इसलिए हर विचारशील व्यक्ति को इस अवसर का लाभ उठाना चाहिए।

अध्याय 8: उठाने वाले के साथ जुड़ें

सरल स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: नव निर्माण के कार्य को लेखक ने किसकी उपमा दी है?

उत्तर: लेखक ने नव निर्माण के कार्य को एक तीव्र नदी-प्रवाह और तूफान की उपमा दी है, जिसका आश्रय लेने से कोई भी कहीं से कहीं पहुँच सकता है।

प्रश्न 2: युग-धर्म के निर्वाह के लिए प्रतिदिन कितना समय लगाने की बात कही गई है?

उत्तर: इस कार्य के लिए प्रतिदिन दो घंटे का समय लगाने भर से असाधारण प्रगति संभव है।

प्रश्न 3: सन् 2000 तक की महापूर्णाहुति के लिए क्या लक्ष्य रखा गया है?

उत्तर: सन् 2000 तक दो पूर्णाहुतियाँ (एक 1995 में, दूसरी 2000 में) करने का लक्ष्य रखा गया है। इन दोनों में कुल मिलाकर दो लाख वेदियों के दीप यज्ञ होंगे और दो करोड़ याजक (भागीदार) सम्मिलित होंगे।

प्रश्न 4: अग्रदूतों (वरिष्ठ परिजनों) को प्रतिदिन क्या छोटा-सा काम सौंपा गया है?

उत्तर: उन्हें प्रतिदिन पाँच-दस परिचितों को इक्कीसवीं सदी से संबंधित नई पुस्तकें पढ़ाने या सुनाने का काम सौंपा गया है।

प्रश्न 5: साधक को सूर्योदय के ध्यान में क्या अनुभव करने के लिए कहा गया है?

उत्तर: साधक को यह अनुभव करने के लिए कहा गया है कि सूर्य का तेज उसके कण-कण और रोम-रोम में समाकर पूरे शरीर को ओजस्वी, तेजस्वी और वर्चस्वी बना रहा है।

प्रश्न 6: विचारक्रांति को क्या कहा गया है और इसके लिए क्या योजना है?

उत्तर: विचारक्रांति को 'ज्ञानयज्ञ' कहा गया है। इसके लिए हर महीने छह नई पुस्तकें छापने और उन्हें अंशदान के माध्यम से एक लाख पाठकों तक पहुँचाने की योजना है।

कठिन स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: "उठाने वाले के साथ जुड़ें" शीर्षक का क्या तात्पर्य है और यह एक सामान्य व्यक्ति को क्या संदेश देता है?

उत्तर: इस शीर्षक का तात्पर्य है कि नव निर्माण का यह कार्य स्वयं महाकाल (भगवान) की प्रेरणा से चल रहा है, जो एक उठाने वाली शक्ति है। यह एक सामान्य व्यक्ति को यह संदेश देता है कि उसे इस दैवी प्रवाह के साथ जुड़ जाना चाहिए। जैसे ऊँचे पेड़ का सहारा लेकर एक कमजोर बेल भी ऊँची चढ़ जाती है या तूफान के साथ उड़कर पत्ते आसमान छू लेते हैं, उसी प्रकार इस महाअभियान से जुड़कर एक सामान्य व्यक्ति भी असाधारण उन्नति कर सकता है।

प्रश्न 2: लेखक द्वारा दिए गए गणित (एक लाख परिजन, 5 वर्ष में 9 करोड़ लोगों तक संदेश) के माध्यम से वे क्या सिद्ध करना चाहते हैं?

उत्तर: इस गणित के माध्यम से लेखक यह सिद्ध करना चाहते हैं कि एक छोटा और नियमित प्रयास भी संगठित रूप से किए जाने पर कितना विशाल परिणाम दे सकता है। यह देखने में आश्चर्यजनक लग सकता है, लेकिन यह न्यूनतम आँकड़ा है। यदि हर समर्पित व्यक्ति थोड़ा-सा समयदान नियमित रूप से करे, तो करोड़ों लोगों तक युग चेतना का संदेश पहुँचाना जरा भी कठिन नहीं है। यह संघशक्ति की महत्ता को दर्शाता है।

प्रश्न 3: इस अभियान में शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक साधना का क्या महत्व है?

उत्तर: इस अभियान में इन तीनों साधनाओं का बहुत महत्व है। शारीरिक स्फूर्ति, मानसिक उल्लास और भावनात्मक संवेदना की योग साधना हर किसी के लिए अनिवार्य है। इससे व्यक्ति का आंतरिक विकास होता है। इसके साथ ही मितव्ययिता (कम खर्च) का अभ्यास करके बचे हुए समय और धन को युग चेतना के प्रसार में लगाने से व्यक्ति अधिक धर्मपरायण और पुण्यात्मा बनता है। यह साधना उसे एक जलते हुए दीपक की तरह

बनाती है जो दूसरे बुझे दीपकों को भी जला सकता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: "पिछले एक शताब्दी में कुविचारों और कुकर्मों की बाढ़ जैसी आ गयी... इसी प्रवाह को यदि उलट दिया जाये तो अगली शताब्दी में सदाशयता की उत्साहपूर्वक अभिवृद्धि भी हो सकती है।" इस कथन में छिपे आशावाद और कार्य-योजना का विश्लेषण करें।

उत्तर: इस कथन में गहरा आशावाद छिपा है, जो यह मानता है कि नकारात्मकता का प्रवाह स्थायी नहीं है और उसे बदला जा सकता है। यह बताता है कि जैसे पिछली सदी में लोगों ने गिरने और गिराने में प्रतिस्पर्धा की, जिससे समाज का पतन हुआ, उसी ऊर्जा को यदि सकारात्मक दिशा में मोड़ दिया जाए, तो अगली सदी में उठने और उठाने की प्रतिस्पर्धा शुरू हो सकती है। **कार्य-योजना यह है कि व्यक्ति के चिंतन को बदला जाए।** विचारक्रांति या ज्ञानयज्ञ के माध्यम से जब लोगों की सोच बदलेगी, तो उनके कर्म स्वतः ही सुधर जाएंगे। इस प्रकार, जो ऊर्जा पतन का कारण बनी, वही ऊर्जा उत्थान का माध्यम बन सकती है, जिससे उज्ज्वल भविष्य की संभावनाएं साकार हो सकती हैं।

प्रश्न 2: इस पूरे अभियान की सफलता का मूल आधार क्या है? क्या यह केवल मनुष्यों के पुरुषार्थ पर निर्भर है या इसके पीछे कोई और शक्ति है?

उत्तर: इस पूरे अभियान की सफलता का मूल आधार केवल मनुष्यों का पुरुषार्थ नहीं है, बल्कि इसके पीछे **महाकाल की दैवी प्रेरणा और उनका दिव्य संरक्षण है।** लेखक स्पष्ट करते हैं कि 'नव निर्माण' महाकाल की योजना है और इसका विस्तार उतना ही होगा जितना सूत्र संचालक ने निर्धारित किया है। मनुष्यों का पुरुषार्थ (जैसे समयदान, अंशदान, ज्ञान का प्रसार) तो केवल एक माध्यम है। असली शक्ति उस दैवी संकल्प की है, जो इस अभियान को चला रही है। इसी विश्वास के कारण यह कल्पना नहीं, बल्कि एक हकीकत मानी गई है कि **बूँद-बूँद से सागर की कहावत चरितार्थ होगी और यह अभियान अपने लक्ष्य से भी आगे जाएगा।**

शब्द/शब्द समुच्चय और उनकी परिभाषाएँ

- **अतिवादी अवांछनीयता** - यह और कुछ नहीं, अधिकांश लोगों द्वारा अचिंत्य-चिन्तन (न सोचने योग्य विचार) और अकरणीय क्रियाकृत्य (न करने योग्य कार्य) अपना लिए जाने का ही प्रतिफल है।
- **दैत्य** - ये मनुष्यों की ही शक्ल-सूरत के होते हैं, अन्तर केवल इतना ही होता है कि दैत्य दूसरों से, संसार से लूटते-खसोटते अधिक हैं और अपने समय, श्रम, चिन्तन तथा वैभव का न्यूनतम भाग सत्कर्मों में लगाते हैं।
- **युगसन्धि महापुरश्चरण** - यह एक सुनियोजित दैवी योजना है जिसका संकल्प एवं लक्ष्य एक ही है— युगपरिवर्तन के लिए उपयुक्त वातावरण एवं परिवर्तन प्रस्तुत करना।
- **प्रज्ञा परिवार** - यह 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका के माध्यम से जुड़कर बना, इक्कीसवीं सदी के उत्कृष्ट आदर्शवादी मोर्चे पर जुझारू स्तर पर लड़ने वाले प्रचण्ड योद्धाओं का परिवार है। इन्हें परिवार के सदस्य और परिजन माना जाता है।
- **दैवी अनुग्रह (वास्तविक चिह्न)** - इसका एक ही चिह्न है—आदर्शवादिता की दिशा में साहसपूर्वक बड़े कदम उठाना और उस प्रयास में आने वाली कठिनाइयों को हँसते-हँसते सहन कर लेना।
- **भगवान् का अनुग्रह** - इसका अर्थ है आदर्शों के परिपालन में बड़ी-चढ़ी साहसिकता का प्रदर्शन करते रहना।
- **प्राण** - शरीर पंचतत्त्वों का बना जड़ घोंसला है, और चेतना ही उसमें प्राण रूप है। प्राण के बिना शरीर निर्जीव हो जाता है। यह देवता है, जिसकी असीम मात्रा विश्व-ब्रह्माण्ड में भरी पड़ी है।
- **प्राणवान् (लोग)** - ये वे लोग हैं जो 'प्राणायाम' की कला में प्रवीण होकर अतिरिक्त मात्रा में प्राण-शक्ति ग्रहण कर लेते हैं और उस संचय से अपना तथा दूसरों का भला करते हैं।
- **शक्तिपात** - यह वह प्रक्रिया है जिसमें कोई समर्थ व्यक्ति अपनी दिव्य क्षमता का एक भाग दूसरे को देकर उसकी सहायता कर सकता है। इस प्रक्रिया के माध्यम से प्राण-शक्ति का हस्तान्तरण होता है।
- **उदार अनुदान** - यह एक ऐसा विधान है जिसके अंतर्गत संसार की पुण्यवान् आत्माएँ, जिनके पास पुण्यफल का प्रचुर भण्डार है, वे जरूरतमन्दों को सहायता देती हैं। यह पुण्य-परमार्थ और दान-अनुदान का क्रम है जो बैंकों के कारोबार की तरह चलता है।
- **विचारक्रान्ति** - इसे ज्ञानयज्ञ कहा गया है।
- **मनुष्य के भाग्य का विधाता (होने का अर्थ)** - इसका अर्थ यह है कि मनुष्य में भवितव्यता (होनी) को टाल सकने और प्रतिकूलता को अनुकूलता में बदल सकने की क्षमता के बीज मौजूद हैं।